P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन

प्रतिष्ठा पुरोहित
एसोसियट प्रोफेसर,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
लालकोठी स्कीम, जयपुर

सुशील कुमार मीणा
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

मानव जीवन का एक अहम, पहलू उसका विद्यार्थी जीवन है। मानव जीवन के इस पहलू पर इसका सम्पूर्ण जीवन निर्भर है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था अब विद्यार्थी केन्द्रित हो गई है। आज बालक को उसकी रुचियों व योग्यता के अनुसार शिक्षा देने पर बल दिया जाता है और पाठ्यक्रम में भी विभिन्नताएँ आ रही हैं। इसलिए इस स्थिति में विद्यार्थी की क्षमता तथा योग्यता का उचित मूल्यांकन कर उसे सही मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए उसकी वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। इस शोध अध्ययन में सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं में समानतापायी गयी।

मुख्य शब्द : वैयक्तिक निर्देशन।

प्रस्तावना

सृष्टि में मानव एक बुद्धिमान एवं विवेकशील प्राणी है। अपनी बुद्धि का उपयोग कर मानव अपने सामाजिक एवं व्यक्तिगत उद्देश्यों को प्राप्त करता है। मानव अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष से समन्वय स्थापित कर आगे बढता जाता है। परन्तु यह साधारण कार्य नहीं है। इस प्रयत्न में उसे अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। अपने जीवन की समस्याओं और कठिनाइयों के निवारण के लिए वह अपने बुजुर्गों के अनुभवों का सहारा लेता आ रहा है।

मानव अपने आप को परखने और समझने के कारण किसी भी परिवेश या परिस्थिति में अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होता है, जिससे अनवरत जानकारी में वृद्धि होती है। अतः इन जानकारियों के क्षेत्र को बढाने के उद्देश्य से औपचारिक, अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न माध्यमों का सहारा लेकर अपेक्षित कुशलताओं को प्राप्त करता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में निर्देशन का अत्यन्त महत्त्व है। निर्देशन मानव के पृथ्वी पर आने के समय से ही शुरु हो चुका है। समय के साथ–साथ निर्देशन के स्वरुप में भी परिवर्तन आता रहा है।उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी की ऐसी असमंजस पूर्ण स्थिति रहती है जो उसके भविष्य से जुड़ी रहती है। ऐसी स्थिति में यदि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त कर ली जाए तो विद्यार्थियों को सही दिशा, ज्ञान और भविष्य मिल सकता है।इस स्तर पर विद्यार्थियों को सही दिशा मिलने पर ही वे सही दिशा में आगे बढ़ेंगे तथा अपने भविष्य को सुदृढ़ करने में सक्षम होंगे। यह स्थिति एक स्वस्थ समाज के निर्माण एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी।

शर्ले हैमरिन के अनुसार

"व्यक्ति के स्वयं को पहचानने में इस प्रकार सहायता प्रदान करना,जिससे वह अपने जीवन में आगे बढ़ सके; इस प्रक्रिया को निर्देशन कहा जाता है।"

वर्तमान और भविष्य की आकांक्षाओं के फलस्वरूप निर्देशन प्रक्रिया के दौरान जहाँ काफी विकास हो रहा है, वहीं वैयक्तिक जीवन में नवीन समस्याओं का प्रादुर्भाव भी हो रहा है। इन समस्याओं से निपटने व वैयक्तिक जीवन के लिए विद्यार्थियों के वर्तमान और भावी जीवन का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए इस दिशा में पर्याप्त शोधकार्य भी वांछनीय है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया गया।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर निर्देशन तथा निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम निर्देशनके आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ जैन, पारस (2016) नेएक शोध ''इम्पैक्ट ऑव करियर गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग ऑन स्टूडेन्ट्स करियर डेवलपमेन्ट'' किया जो बतलाता है कि निर्देशित तरीके से चलने वाले विद्यार्थियों को सफलता और जीवन संतुष्टि प्राप्त होती है। जबकि मार्गदर्शन के बिना लिए गये निर्णय से असंतुष्टि प्राप्त होती है। प्रशान्त एवं मनीषा (2015) ने '' द रिलेशनशिप बिटविन परसिव्ड स्ट्रेस, सेल्फ एस्टीम वे ऑव कॉपिंग एण्ड प्रोब्लेम सोल्विंग एबिलिटी अमोंग स्कूल गोईंग एडोलसेन्ट्स '' विषय पर अध्ययन कियाऔर पाया कि स्कूल जाने वाले किशोरों के कथित तनाव, आत्मसम्मान और समस्या समाधान की क्षमता के बीच सार्थक संबंध मौजूद है। परवथ्य एवं पिल्लै (2015) ने '' इम्पैक्ट ऑव लाइफ स्किल्स एजुकेशन ऑन एडोलसेन्ट्स इन रूरल स्कूल्स'' विषय का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणाम केरला के इस तटीय विद्यालय के लड़कों और लड़कियों में जीवन कौशल शिक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रभाव को दर्शाते हैं। पुजर एवम् अन्य (2014) ने ''इम्पैक्ट ऑव इन्टरवेन्शन ऑन लाइफ स्किल डेवलपमेन्ट अमोंग एडोलसेन्ट गर्ल्स'' विषय पर शोध कार्य किया और पाया कि जीवन कौशल हस्तक्षेप देने के बाद विभिन्न जीवन कौशलों में एक महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ, और यह भी पाया गया कि जीवन कौशल शिक्षा ग्रामीण किशोरावस्था की लड़कियों को सकारात्मक कार्य करने, तनाव और समस्या समाधान की क्षमता कौशल में सुधार करने में मददगार थी। सोढी, केतकी एवं कक्कर, शिवांगी (2014), पीटर एवम् अन्य (2013), रामाकृष्णन एवं जलजाकुमारी (2013), रेणुका एवम् अन्य (2013), सेवदा, असलन (2012), इसमेसिलिनेसल्स एवम् अन्य (2011), नसीर एवं सोरान (2010), आमिर एवम् अन्य (2010), शतरूपा एवम् अन्जना (2010), हुसैन, ए. (2006) ने अपने अध्ययन निर्देशन तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध का उद्देश्य

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

शोधकर्त्ता सुशील कुमार मीणा एवं शोध निर्देशिका डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित द्वारा स्वनिर्मित निर्देशन मापनी।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में सीकर जिले की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 600 विद्यार्थियों को; 200 कला संकाय से, 200 विज्ञान संकाय से तथा 200 वाणिज्य संकाय से, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. टी मान

परिकल्पना–1

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1.1

(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	अन्तर की मानक त्रुटि	मध्यमानों का अन्तर	स्वतंत्रता के अंश	आलोचनात्मक अनुपात
शहरी	300	42.29	6.11	0.51	0.06	598	0.117
ग्रामीण	300	42.35	6.39				

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरीएवं ग्रामीण विद्यार्थियों की निर्देशन मापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 42.29 व 42.35 है तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 6.11 व 6.39 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0. 51 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.06 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.117 है जो कि 598 स्वतंत्रता के अंश हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–1 स्वीकृत होती है अर्थात् सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

यद्यपि शहरी विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान से कम है। लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थी वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की दृष्टि से समान होते हैं। उनके वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओंके स्तर में कोई विशेष एवं सार्थक अन्तर नहीं होता है।

लेखाचित्र संख्या – 1

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओंके मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

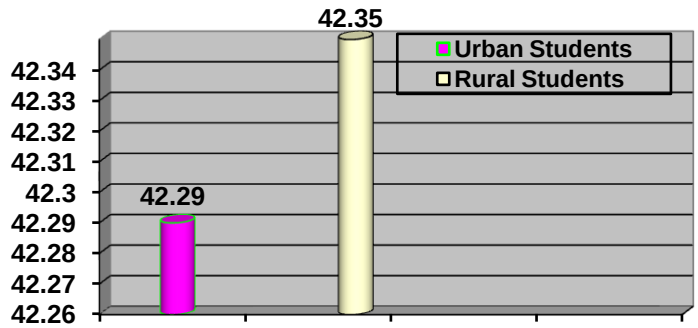

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार सीकर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की निर्देशन परिसूची के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 42.29 व 42.35 है, जो कि नगण्य अन्तर है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि सीकर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के शहरीएवं ग्रामीण विद्यार्थी वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं के स्तर की दृष्टि से समान होते हैं। उनकी वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक निर्देशन सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

1. विद्यार्थियों के उनके वैयक्तिक स्तर के अनुरूप निर्देशन सेवाओं के अवसर उपलब्ध करवाये जाने चाहिए।
2. विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में उपस्थित परिवेश आधारित वैयक्तिक निर्देशन संबंधी समस्याओं का निवारण किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
3. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
4. *जायसवाल, सीताराम (2008), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
5. *मंगल, अंशु एवं अन्य (2004), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।*
6. *Social Forces, Volume 88, Issue 2, 1 December 2009, Pages 917–944*
7. *Sociology of Development, Vol. 1 No. 2, Summer 2015; pp. 321-346*

Websites

8. *www.eric.ed.gov*
9. *www.scholar.google.com*
10. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*